ACT

B.A Part III

By - Madhu Tyagi
Asst Professor - History
Govt. Degree College Bhojpur (Mora...)

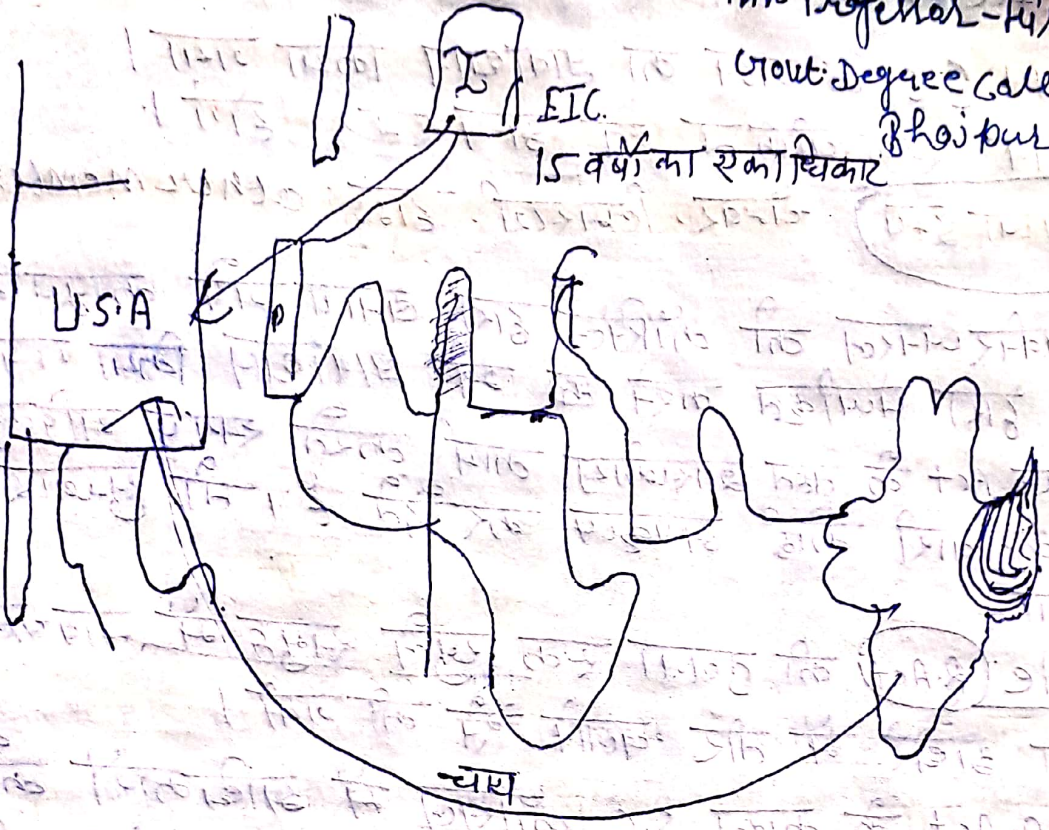

रेग्यूलेटिंग एक्ट

=) शर्त चुनाव की तिथि से एक वर्ष पहले 1000 पौंड के शेयर होल्डर्स हो

=) इंग्लैण्ड स्थित प्रशासन

=) बारवेल नियुक्ति के समय भारत में था एवम वारेन हेस्टिंग्स भी भारत में था।

=) गवर्नर जनरल को अपनी बात मनवाने के लिए दो सदस्यों का समर्थन अनिवार्य। गवर्नर जनरल की कौंसिल में विवाद हो गया

=) इन सबका नाम रेग्युलेटिंग एक्ट में लिख दिया गया।

सदस्य ने कौ बाद (E.I.C) को दिया गया।

⇒ R·Act के तहत गवर्नर जनरल की कौंसिल को कोर्ट ऑफ डायरेक्टर के प्रति जवाबदेह कर दिया गया।

⇒ 1774 S·C के गठन का प्रावधान किया गया। जिसमें एक चीफ न्याय व अन्य (3) होंगे।

(एलिजा इम्पे) चैम्बर, लिमस्टर, हाइड other member

⇒ गवर्नर जनरल की कौंसिल द्वारा बनाये गये कानून को S.C द्वारा पंजीकृत करने का भी प्रावधान किया गया।

⇒ इस Act के तहत शासकीय कार्य करते समय यदि कंपनी के कर्मचारी कोई अपकृत्य कर देते है। तो सुनवाई S.C करेगा।

Note (R.Act) की तुलना एक खुले समुद्र में नावचलाना या अंधेरे में तीर चलाने से की गयी।

⇒ R·Act के कारण S.C कौंसिल में अधिकारों को लेकर विवाद हुआ (1781) सेटलमेंट Act से दूर किया

(1781) Act :- 1. कौंसिल द्वारा बनाया गया कानून S.C में अब पंजीकृत नहीं होगा।

2. सरकारी कर्मचारी शासकीय कार्य करते समय तो उस निर्णय G.G की कौंसिल करेगी।

(1784) Act :- पिट Act

Note (फॉक्स बिल) यह बिल हाउस ऑफ कामन्स में तो पास हो गया हाउस ऑफ लार्ड में पारित नहीं हो पाया जिस कारण लॉर्ड नापजक फॉक्स को मिली जुली सरकार को इस्तीफा देना पड़ा।

⇒ यह पहला और अन्तिम अवसर था जब इंग्लैंड की सरकार भारतीय मामलों पर और गिर गयी थी।

Scanned with CamScanner

→ इसके बाद पिट की सरकार बनी।

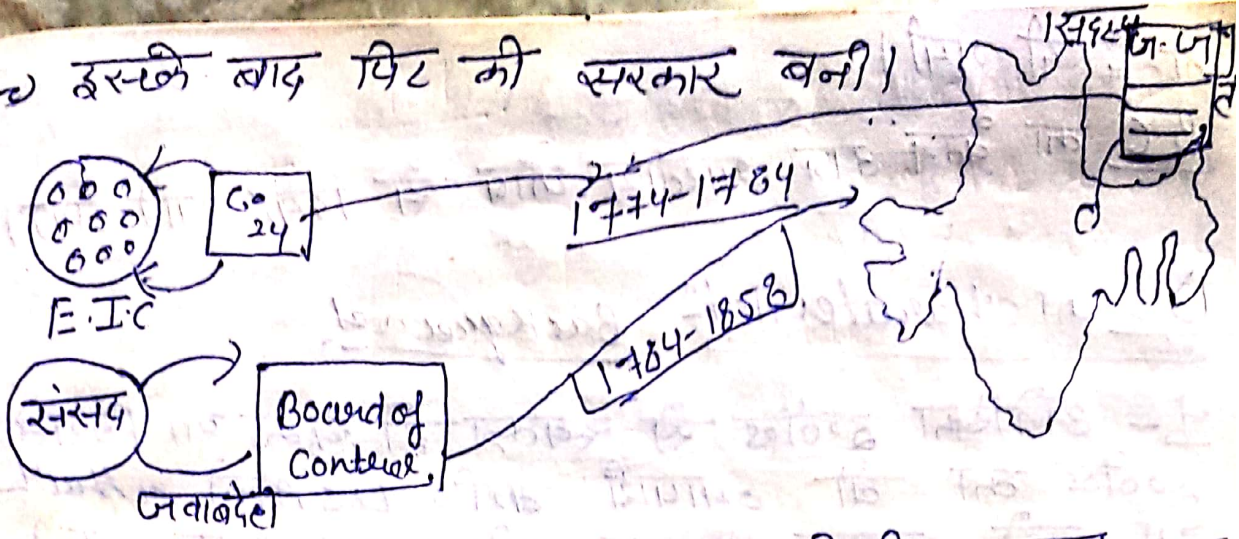

⇒ पिट Act से कम्पनी के प्रशासन में दोहरी व्यवस्था लागू हुई।

→ गवर्नर जनरल और उसके सदस्य को नियुक्ति कम्पनी करती थी B.C की अनुमति पर वापस बुलाये जा सकते थे

→ ज.ज की कौंसिल को अपने राजस्व खाते B.C को दिखाने पड़ते थे।

→ B.C की अनुमति के बिना ज.ज की कौंसिल किसी देशी रियासत के साथ युद्ध, सन्धि आदि नहीं कर सकती थी।

→ ज.ज से एक सदस्य कम करके यह संख्या तीन कर दी गयी।

→ ज.ज को अपनी बात मनवाने के लिए एक सदस्य का समर्थन आवश्यक था।

→ हस्तक्षेप भारत स्थित प्रशासन में हो गया।

(1786) का सेटलमेंट एक्ट. कार्नवालिस

- विशेष परिस्थितियों में निर्णय करने की Power
- ज.ज के साथ चीफ कमांडर की Power

(1793) प्रथम इण्डियन चार्टर Act

→ ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत का प्रशासन 20 साल के लिए दे दिया गया।

→ जो Power 1786 के सेटलमेंट Act से कार्नवालिस

को दे दी गयी।
B.C का वेतन अब भारतीय कोष से दिया जाने लगा।

1813 का Charter Act:- Background.

1- अमेरिका इंग्लैण्ड से स्वतंत्र हो चुका था जिससे इंग्लैण्ड का जो व्यापारी वर्ग U.S.A से attach था उसे ~~स्वतंत्र व्यापार~~ बाजार की आवश्यकता थी।

2) औद्योगिक क्रांति से इंग्लैण्ड में नये औद्योगिक घरानों को जन्म हो गया था जिन्हे नये बाजार की आवश्यकता थी।

3) यूरोप में स्वतंत्र विचारशील पत्रकार वर्ग जो मुक्त व्यापार का हिमायती था और अपनी लेखनी से सरकार पर ~~दबा~~ दबाव डाल रहा था। आदि कारकों का इस Act पर effect पड़ा।

1813 Act

1) अगले 20 वर्ष तक शासन का दायित्व ईस्ट इंडिया कम्पनी को।

2) ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापारिक अधिकार समाप्त कर दिये गये। (चाय और चीन के अधिकार को छोड़कर।

3) ईस्ट इंडिया कम्पनी को शिक्षा पर एक लाख रुपये खर्च करने का प्रावधान।

4) कम्पनी को अपने व्यापारिक व राजस्व खाते अलग-2 करने पड़े।

5) ईसाई मिशनरियों को भारत में प्रवेश की अनुमति।

⇒ यदि कोई यूरोपियन भारत में बसना चाहता था तो उसे लाइसेंस देकर भारत में बसने की अनुमति दे दी गयी।

Note:- भारत पर ब्रिटिश प्रभुसत्ता इसी Act से स्थापित हुई।

⇒ भारत पर ब्रिटिश प्रभुसत्ता लार्ड हेस्टिंग्स के काल में स्थापित हुई।

1833 का Charter Act:-

⇒ अगले 20 साल तक शासन ईस्ट इंडिया कम्पनी को दिया जायेगा।

⇒ यहाँ प्रशासन और विधायन का केन्द्रीकरण कर दिया गया अर्थात बम्बई प्रेसडेंसी, मद्रास " को कलकत्ता प्रेसिडेंसी से जोड़ दिया गया।

⇒ चाय और चीन के अधिकार समाप्त कर दिये गये।

⇒ विधि आयोग के गठन का प्रावधान किया गया ताकि कानून को संहिता बद्ध किया जा सके।

⇒ इस अधिनियम की धारा 87 के तहत रंगभेद की नीति को समाप्त करने की घोषणा दास प्रथा समाप्ति की भी घोषणा की गयी लेकिन इस घोषणा को (1843) नियम 5 से लार्ड एलनबरो ने समाप्त की।

⇒ गवर्नर जनरल की कौंसिल में एक स्थायी जोड़ दिया गया जिसे विधि सदस्य कहा

~~1833 Charter Act~~

~~⇒ BEC~~

यह विधि सदस्य गवर्नर जनरल की कौंसिल में तब बैठता था जब वो विधि निर्माण के लिए होती थी यह प्रशासनिक कार्यों में नहीं बैठता था।

1853 का Character Act

1) विधि सदस्य को स्थायी कर दिया गया।

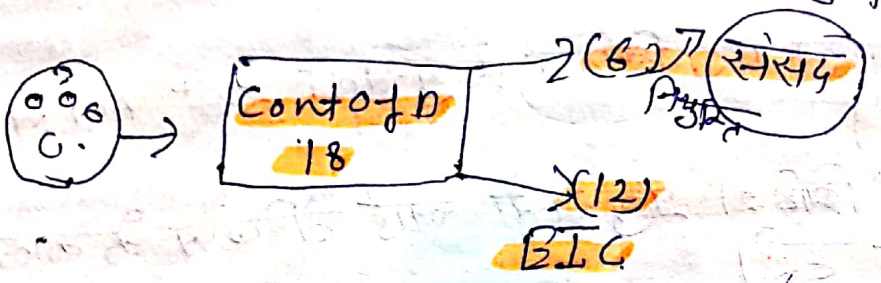

2) पहली बार गवर्नर जनरल की कौंसिल का विस्तार कर दिया गया अर्थात जब यह कानून बनाने बैठती थी तो इसमें 6 व अन्य अतिरिक्त सदस्यों की नियुक्ति का प्रावधान कर दिया गया। अर्थात गवर्नर जनरल की 12 सदस्य कौंसिल कानून बनाने के लिए बैठ सकती थी इस तरह पहली बार विधान परिषद शब्द का प्रावधान किया गया।

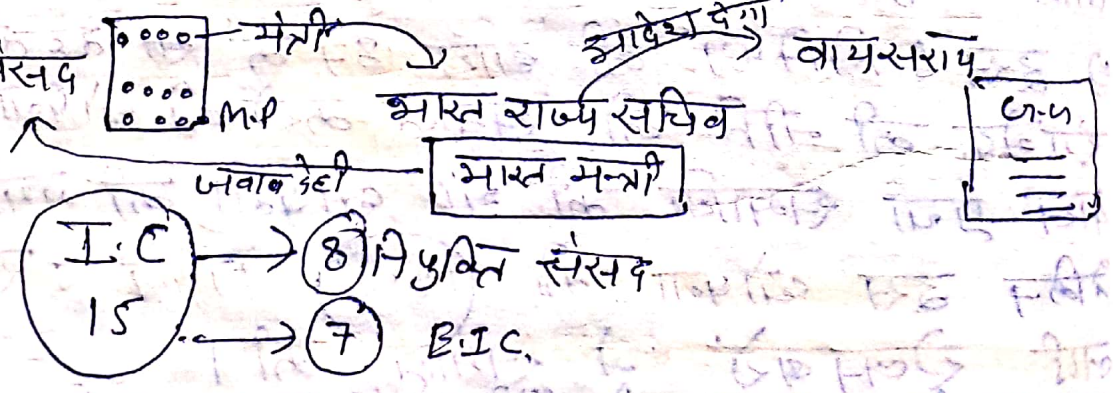

1858 का भारत परिषद अधिनियम

(9 सदस्य ऐसे होंगे जिन्हें भारत में कम से कम 10 years का experience रहा हो)

2) इस Act से दोहरी शासन प्रणाली जो PIT Act से चली आ रही थी वो समाप्त हो गयी।

⇒ बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल और कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को भंग कर दिया गया और इसकी समस्त पावर भारत राज्य सचिव को दे दी।

⇒ इस Act के माध्यम से भारत पर ब्रिटिस संसद का प्रत्यक्ष शासन प्रारम्भ हुआ।

⇒ भारत राज्य सचिव को सहायता देने के लिए एक इंडियन कौंसिल बनायी गयी जिसमे 15 सदस्यों का प्रावधान किया गया।

⇒ भारतीय कोष से कोई भी धनराशि इंडियन कौंसिल की अनुमति के बिना विशेष परिस्थितियों से छोड़कर भारत से बाहर किसी सैनिक कार्यवाही से बाहर नहीं की जायेगी।

First Indian Council Act 1861

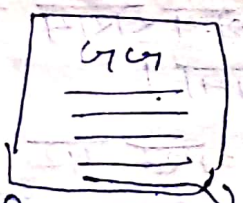

⇒ विधायन और प्रशासन का विकेंद्रीकरण किया गया अर्थात बम्बई और मद्रास को (विधिवेत्ता) कानून बनाने का पुनः अधिकार मिला। लेकिन इन्हे अपना द्वारा बनाया गया कानून कलकत्ता से पास कराया जाता था।

⇒ वायसराय की कार्यकारिणी को अच्छा प्रशासन चलाने के लिए अतिरिक्त अधिकार प्रदान किये गये।

⇒ इसी Power को use करते समय विभागीय प्रणाली की शुरुआत की। कैबिनेट की नींव डाली।

⇒ गवर्नर जनरल की कौंसिल का विस्तार कर दिया गया अतिरिक्त सदस्य 12 से बढ़ाकर 15 कर दिये गये।

⇒ वायसराय अपनी कौंसिल के निर्णय के विरुद्ध अध्यादेश जारी कर सकता 6 Months तक valid रह सकता था।

Scanned with CamScanner

Note:- यह वह समय था जब भारत में राष्ट्रवाद का उदय हो चुका था। और फिर इन लोगों ने ब्रिटिश सरकार से सुधारों की मांग की थी इसका एक परिणाम (1892) का II Counsile Act पारित किया गया।

2)

यह Act विधान मंडलों प्रकार कार्यप्रणाली से ही सम्बन्धित था।

II nd Counsile Act 1892

1) वायसराय की ~~कार्यप्रणाली~~ Councile का विस्तार किया गया।

2) भारत पर बजट पर प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया। लेकिन मत विभाजन व अनुपूरक प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं दिया गया।

3) निर्वाचन पद्धति को स्वीकार किया गया।

4) सार्वजनिक महत्व से सम्बन्धित मामलों पर 6 दिन की पूर्व सूचना पर प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।

1909 का मार्ले मिण्टो अधिनियम

मंत्रसचिव · वायसराय

Background इस Act के माध्यम से ब्रिटिश सरकार एक ओर उदारवादियों को कुछ रियायत दे रही थी। ताकि दूसरी ओर जब वह गर्मदल का दमन करे तो यह वर्ग

ज्यादा प्रतिक्रिया न करे। कहीं कांग्रेस का उदारवादी दल कहीं अधिक ताकतवर न हो जाये उसे मुस्लिम लीग के माध्यम से समायोजित करने का प्रयास कर रही थी।

=) वायसराय की Council का विस्तार कर दिया गया।

=) बजट पर अनुपूरक प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।

=) सार्वजनिक महत्व के प्रश्न पर भी अनुपूरक प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।

=) वायसराय की कौंसिल में पहली बार भारतीय सदस्य की नियुक्ति की गयी।

(1) सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा (2) के० सी० गुप्ता।

1919 – मान्टेग्यु चेम्सफोर्ड Act

=) 1909 Act को नकार दिया
I world war हताशा
होमरूल आन्दोलन

Aug 1917 - मान्टेग्यु घोषणा
घोषणा – 1918
बिल पारित – 1919 अधिनियम

(1) ब्रिटेन का उद्देश्य भारत में स्वशासन विकसित करना।

(2) स्वशासन सभी क्षेत्रों में एक साथ लागू नहीं किया जायेगा।

(3) दूसरे क्षेत्रों में स्वशासन लागू करना इस बात पर निर्भर होगा भारतीय इस क्षेत्र में कितनी प्रगति की।

(4) इस प्रगति का निर्धारण वायसराय के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार करेगी।

=) मांटेग्यु भारत आये और शिमला में चेम्सफोर्ड से मिले और इसके बाद मांटेग्यु चेम्सफोर्ड रिपोर्ट 1918 में जारी हुई। इसी रिपोर्ट को आधार बनाकर एक बिल ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में पेश हुआ जो दिसम्बर 1919 में पास हुआ।

Scanned with CamScanner

1919 Act → पहला अवसर था जब भारत को B.P द्वारा स्वशासन देने की बात कही गयी।

इंग्लैंड में भारत change

⇒ राज्य सचिव के office का खर्च अब भारतीय कोष के स्थान पर ब्रिटिश संसद द्वारा भार दिया जाता था।

(2) I.C → 8 → 12 कर दी गयी।

(3) राज्य सचिव पर कार्य का भार कम करने के लिए हाई कमीश्नर का पद गठित किया गया।

⇒ भारत में द्विसदनात्मक व्यवस्था की गयी (1) राज्य परिषद (2) विधान सभा।

⇒ महिलाओं को मताधिकार का प्रावधान

⇒ सिक्खों को अलग निर्वाचक मंडल मिला।

⇒ प्रान्तों में दोहरी शासन व्यवस्था स्थापित की गयी

J.C

इस Act के तहत जो संवैधानिक सुधार लागू किये जा रहे हैं। उनकी प्रति दस वर्ष की समाप्ति पर समीक्षा का प्रावधान कर दिया गया।

1935 का भारत शासन अधिनियम

⇒ Act 321 धाराएँ 10 अनुसूची 14 भाग

⇒ ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय मामलों पर पारित सबसे बड़ा Act

⇒ इंग्लैण्ड & इण्डियन कौंसिल की समाप्ति।

⇒ अखिल भारतीय संघ के गठन का प्रावधान लेकिन इस संघ में ब्रिटिश प्रान्तों का शामिल होना आवश्यक था जबकि देशी रियासतों का शामिल होना उनकी इच्छाओं पर छोड़ दिया गया। परन्तु संघ तभी अस्तित्व में आ सकता था जब आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाली रियासतें इसमें शामिल हो जायेगी। आपेक्षित जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाली देशी रियासतें इसमें शामिल नहीं होगी। इसलिए यह संघ अस्तित्व में नहीं आया।

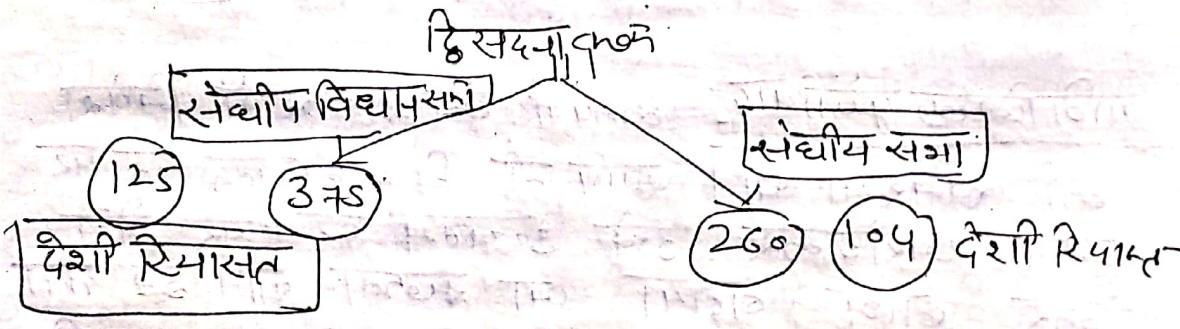

⇒ इस Act में विषयों को तीन सूचियों में बाँटा गया। (1) संघ सूची (59) राज्य सूची (54) समवर्ती सूची (36)

⇒ प्रान्तों में दोहरीशासन प्रणाली समाप्त कर दी गयी।

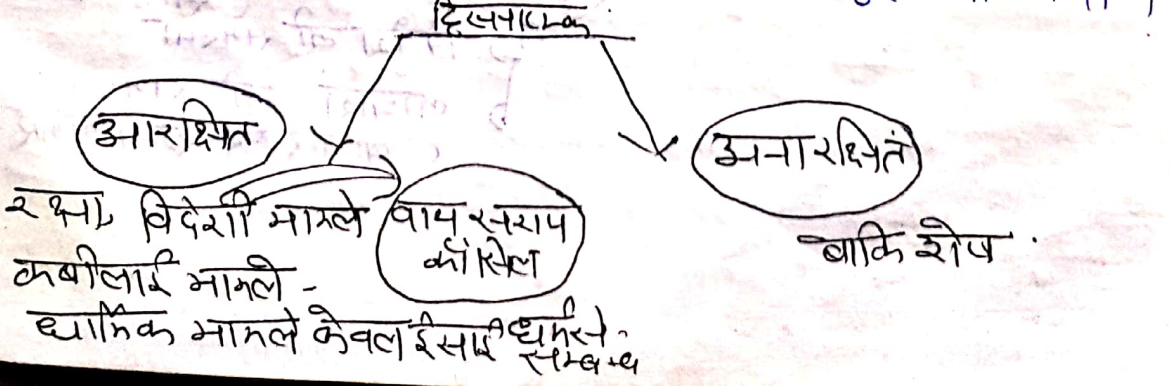

⇒ केन्द्र में दोहरी शासन प्रणाली लागू की गयी।

2) कुछ प्रान्तों में दोहरी शासन व्यवस्था लागू की गयी (1) बम्बई (2) बंगाल (3) मद्रास संयुक्त प्रांत बिहार

3) बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया।

4) R.B.I के गठन का प्रावधान किया गया।

Note Act की अनुच्छेद 93 वर्तमान की अनुच्छेद 356 थी।

भारत में औपनिवेशिक काल

- वाणिज्यिक पूँजीवाद (1757-1813)
- औद्योगिक पूँजीवाद (1813-1858)
- वित्तीय पूँजीवाद (1858-1947)

वाणिज्यिक पूँजीवाद: कम्पनी को प्रारम्भ में निवेश की समस्या थी। साथ ही निम्न न्यूनतम दर पर माल खरीदकर उसे उच्चतम दर पर बेच कर लाभ बढ़ाया जा सकता था। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति सत्ता पर नियन्त्रण स्थापित करके की जा सकती बक्सर का युद्ध इसी दूरगामी नीति का परिणाम था इससे कम्पनी ने बंगाल के राजस्व पर नियन्त्रण स्थापित किया निवेश की समस्या का हल किया। और साथ ही व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया।

कम्पनी
- निवेश की समस्या — बुलियन कमी (सोना, चाँदी)
- लाभांश की समस्या (बाजार पर एकाधिकार)

औद्योगिक पूंजीवाद

इस काल में भारत को ब्रिटिश के एक ऐसे उपनिवेश के रूप में काम करना था जिससे इंग्लैंड को कच्चा माल प्राप्त हो सके। अर्थात भारत को कृषि अर्थ व्यवस्था के रूप में विकसित करना था न कि शिल्प उद्योगों को विकसित करना था। इसके लिए भू राजस्व नीति का सहारा लिया गया। ऊँचे स्तर पर भूराजस्व निर्धारित कर दिया गया। ~~ऊँचे स्थानों पर भूराजस्व~~ किसानों को नकदी फसल बोने के लिए मजबूर किया गया।

वित्तीय पूंजीवाद

इस समय यूरोप में एंजिल और मार्क्स की कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो अंग्रेजी अनुवाद पहुंच चुका था। इससे इंग्लैंड के ~~औ~~ उद्योगपतियों में यह डर सताने लगा कि इंग्लैंड में और अधिक निवेश औद्योगिक करण को बढ़ायेगा जिससे कि मजदूर और अधिक शक्तिशाली होकर सौदे बाजी की स्थिति में आ सकते हैं। इसलिए अतिरिक्त पूंजी भारत में निवेश की गए भारत सरकार की गारंटी प्रणाली के तहत निवेश की गयी। लेकिन निवेश करते समय यह ध्यान रखा गया जो उद्योग इंग्लैंड में स्थित है उन्हें भारत में स्थापित नहीं किया इससे भारत में प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है।

Scanned with CamScanner